नया ज्ञानोदय

अप्रैल-मई 2026
मूल्य : 50 रुपये

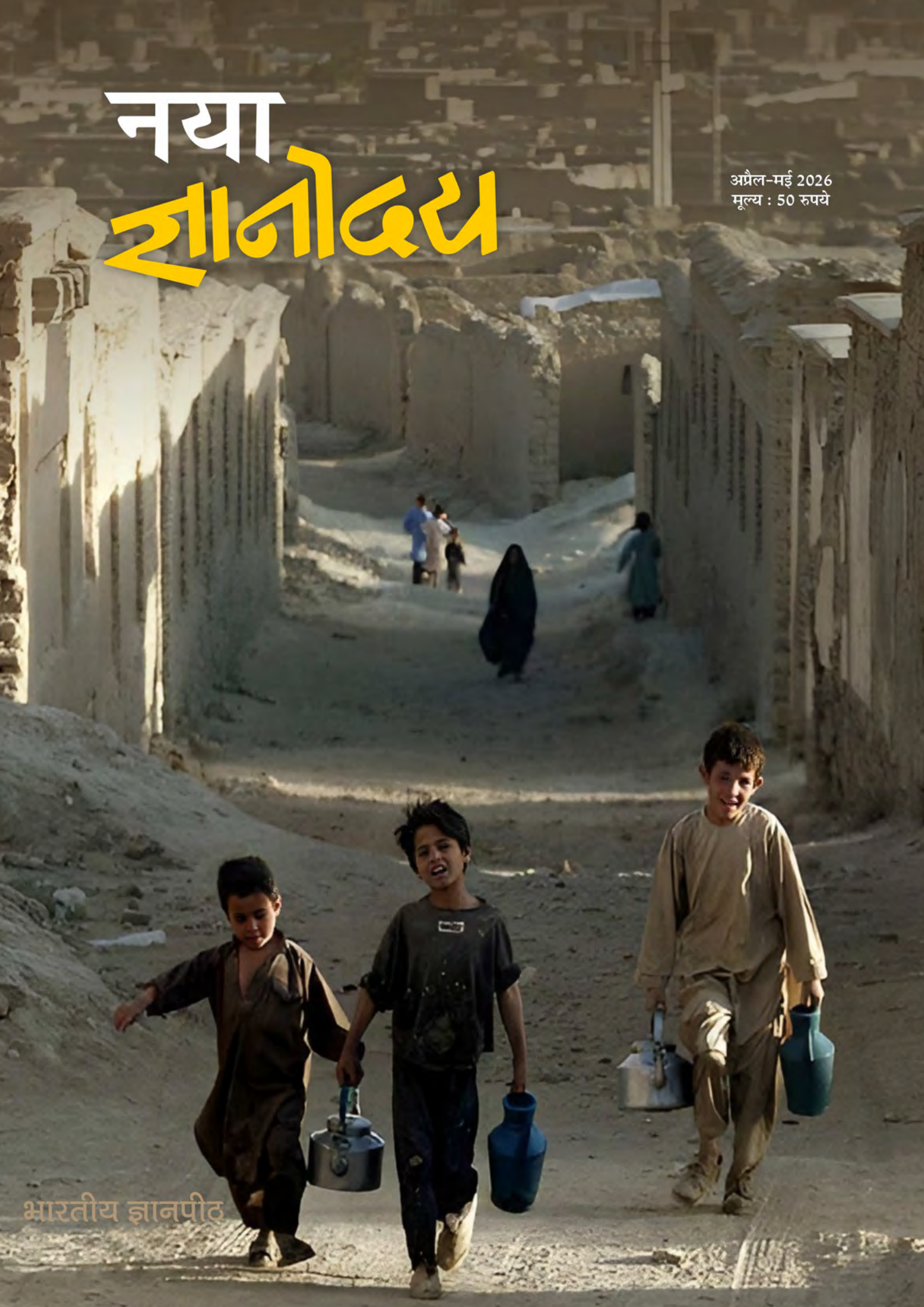

भारतीय ज्ञानपीठ

भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन

श्री साहू शांति प्रसाद जैन

सम्पादक

महेश्वर

प्रबंध-सम्पादक

आर.एन. तिवारी

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

अंक: 238, अप्रैल-मई 2026

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

अंक: 238, अप्रैल-मई 2026
पृष्ठः 84 (आवरण सहित)

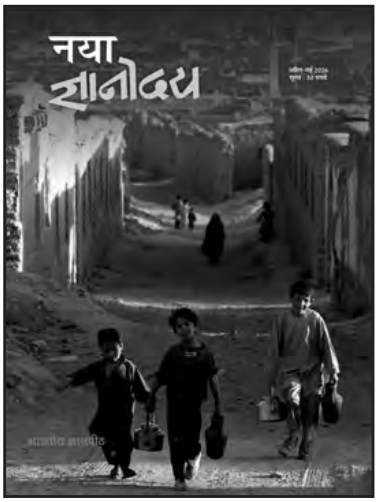

सम्पादक
महेश्वर

प्रबंध-सम्पादक
आर.एन. तिवारी

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशकः **भारतीय ज्ञानपीठ**
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110 003
फोनः 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेलः nayagyanoday@gmail.com,
bookclub@jnanpith.net,
gmbharatiyajnanpith@gmail.com

वेबसाइटः **www.jnanpith.net**

Naya Gyanodaya
A Literary Bi-monthly Magazine
Editor: **Maheshwar**
Language: **Hindi**
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003

मूल्यः
50 रुपये + 16 रुपये (डाक खर्च)

व्यक्तियों/संस्थाओं के लिए:
वार्षिक (6 अंक): 420 रुपये (डाक खर्च सहित, साधारण डाक से)
वार्षिक (6 अंक): 730 रुपये (डाक खर्च सहित, रजिस्टर्ड डाक से)

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ' (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से, उपर्युक्त पते पर चेक या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें।

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।
प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं।
समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

विष्णु नागर

भालचन्द्र जोशी

जयनंदन

प्रेम रंजन अनिमेष

वंदना शुक्ल

ज्योति चावला

नया ज्ञानोदय

अंक: 238, अप्रैल-मई 2026

इस अंक में

सम्पादकीय

संग-साथ : महेश्वर 05

स्मरण

साहित्य की दौड़ से दूर मधुसूदन आनंद : विष्णु नागर 06

कहानी

गुमशुदा नींद : भालचन्द्र जोशी 10

हाईब्रीड : जयनंदन 22

नन्हे फरिश्ते : प्रेम रंजन अनिमेष 26

जंगल, लकी बेल्स और मेमना : वंदना शुक्ल 34

जूमइन

ज्योति चावला की कविताएं 42

फिलिस्तीनी कहानी

खजूर और कड़वी कॉफ़ी : डोनिया अल-अमल इस्माइल 46

(अनु.: बालमुकुन्द नन्दवाना)

युद्ध केन्द्रित कविताएँ

युद्ध के पार की आवाज़ें! : अनु. श्रीविलास सिंह 50

नाज़िम हिक़मत, महमूद दरवेश, नज़वान दरवीश, मोसाब अबू तोहा, सारा अबू राशिद सरहिए ज़दान, चार्ल्स बुकोवस्की, सेसिल एल. हैरिसन, वॉल्ट व्हिटमैन, मुजाहिदुल रेज़ा यहूदा अमिचाई, ली पो, रसूल हम्ज़ातोव, दुन्या मिखाईल, अंगकर्ण चंठाथिप, ज़ीना आज़म नतालका बिलात्सिरकीवत्स, अब्दुल बारी जहानी, फ़ौद मोहम्मद फ़ौद

आलेख

हिंदी उर्दू का अंतर्संबंध– कुछ विचार कुछ सवाल : हैदर अली 62

कहा-कही

अमानुषिकता के उपकरण का मु'आइना करती अखिलेश की कहानियां : पंकज शर्मा 66

सेल्यूलॉयड चैप्टर

असीमित संभावनाओं की उड़ान से ठीक पहले : विभावरी 71

परस्पर

कविता की वैचारिक निर्मिति : लीलाधर मंडलोई और मदन कश्यप की बातचीत 74

पुस्तक समीक्षा

समय, समाज और मनुष्य की आवाज़ें : भारती मिश्र 79

साहित्यिक हलचल 49

रेखांकन : संदीप राशिनकर, साज-सज्जा : ज्ञानपीठ कला प्रभाग, आवरण : साभार

प्रतिष्ठा में,
प्रसार अधिकारी, नया ज्ञानोदय
भारतीय ज्ञानपीठ
18, इंस्टिट्यूशनल एरिया, लोधी रोड,
नयी दिल्ली-110 003

नया ज्ञानोदय

सदस्यता-प्रपत्र

महोदय, द्वैमासिक पत्रिका का नियमित सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। सदस्यता शुल्क..... रु. मनीआर्डर/ बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज रहा/रही हूँ। कृपया ज्ञानोदय के अंक मुझे .....से..... तक नियमित रूप से भिजवाते रहें।

नया ज्ञानोदय के नाम भेजी गई राशि का विवरण—

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक.....दिनांक.....
जारी करने वाले बैंक का नाम..... शाखा.....

व्यक्तिगत/संस्थान विवरण

नाम.....
पता.....
.....
.....
..... पिनकोड.....
फोन नं..... ई-मेल.....

सदस्यता शुल्क

व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए :

वार्षिक (6 अंक) : 420 रुपये (डाक खर्च सहित, साधारण डाक से)
वार्षिक (6 अंक) : 730 रुपये (डाक खर्च सहित, रजिस्टर्ड डाक से)

बैंक ड्राफ्ट/चैक— भारतीय ज्ञानपीठ के नाम दें।

BANK ACCOUNT DETAIL OF BHARATIYA JNANPITH

Bank: **Axis Bank** Branch: **Defence Colony**
Account No.: **357010100002783** Account Type: **Saving Account**
Mode of Electronic Transfer: RTGS / NEFT / IMPS any other
IFSC Code: **UTIB0000357** MICR Code: **110211036**

फोन : 011-41523423, 24626467 (एक्सटेंशन 27) ई-मेल : bookclub@jnanpith.net

संग-साथ

'नया ज्ञानोदय' के इस अंक का संपादन मेरे लिए केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक दीर्घ साहित्यिक यात्रा का स्वाभाविक विस्तार है। वर्ष 2005 में जब मैंने इस पत्रिका के साथ काम शुरू किया, तब आदरणीय श्रोत्रिय जी संपादक थे। उनके साथ काम करते हुए साहित्य की गंभीरता और संपादकीय अनुशासन का पहला पाठ सीखा। बाद में रवीन्द्र कालिया और लीलाधर मंडलोई के संपादन में पत्रिका ने जो विस्तार पाया, उसने मेरी दृष्टि को और व्यापक किया। 2018 में मधुसूदन जी के साथ काम करते हुए संपादन के मानवीय पक्ष—संवेदना, आत्मीयता और सृजनधर्मिता—को निकट से समझने का अवसर मिला। आज जब इस अंक का स्वतंत्र संपादन कर रहा हूँ, तो इन सभी पूर्व संपादकों का स्मरण कृतज्ञता और भावपूर्ण सम्मान के साथ स्वाभाविक रूप से उपस्थित है।

यह अंक अपने समय की जटिलताओं और मानवीय अनुभवों को विविध रूपों में सामने लाता है। कहानियों में भालचन्द्र जोशी, जयनंदन, प्रेमरंजन अनिमेष और वंदना शुक्ला की रचनाएँ हमारे समय के भीतर मौजूद अकेलेपन, विडंबना और संवेदनात्मक संघर्षों को गहराई से उद्घाटित करती हैं।

इस अंक से हम कुछ नए स्तंभ भी आरंभ कर रहे हैं, जो 'नया ज्ञानोदय' को एक निरंतर संवाद की दिशा में ले जाने का प्रयास हैं। आलोचक पंकज शर्मा का कहानी-केंद्रित स्तंभ 'कहा-कही' समकालीन कथा-साहित्य पर गंभीर दृष्टि डालता है। सिने-अध्येता एवं कवयित्री विभावरी का 'सेल्यूलॉयड चैप्टर' सिनेमा को साहित्यिक संवेदना के साथ पढ़ने का अवसर देता है। 'परस्पर' स्तंभ साहित्यिक विमर्श को केंद्र में रखकर संवाद की नई संभावनाएँ खोलता है, जिसमें इस अंक में लीलाधर मंडलोई और मदन कश्यप के बीच संवाद शामिल है—यह इस अंक की एक विशेष उपलब्धि है। यह संवाद कविता के समकालीन परिदृश्य पर गंभीर और विचारोत्तेजक विमर्श प्रस्तुत करता है। यह बातचीत न केवल रचना-प्रक्रिया को समझने में मदद करती है, बल्कि साहित्य की सामाजिक भूमिका पर भी नए प्रश्न खड़े करती है।

कविता के क्षेत्र में 'ज़ूमइन' स्तंभ के अंतर्गत इस बार ज्योति चावला की कविताएँ प्रस्तुत हैं, जो समकालीन काव्य-स्वर की एक विशिष्ट पहचान निर्मित करती हैं। साथ ही, विश्व कविता से एक चयन—श्रीविलास सिंह की प्रस्तुति—इस अंक को वैश्विक संवेदना से जोड़ता है। कविताओं में युद्ध और उसके पार की आवाज़ों को जिस वैश्विक संदर्भ में रखा गया है, वह हमारे समय की त्रासदी को व्यापक मानवीय धरातल पर देखने की दृष्टि देता है।

यह अंक केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि एक जीवंत साहित्यिक संवाद की पहल है। अपने पूर्ववर्तियों की परंपरा को स्मरण करते हुए यह प्रयास है कि 'नया ज्ञानोदय' अपने समय की जटिलताओं से जूझते हुए पाठकों के बीच एक विश्वसनीय और विचारोत्तेजक मंच बना रहे। इस प्रथम स्वतंत्र संपादित अंक को मैं एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ—इस विश्वास के साथ कि साहित्य का असली काम मनुष्य और उसके समय के बीच संवाद को जीवित रखना है।

अंत में, पाठकों से विनम्र आग्रह है कि वे 'नया ज्ञानोदय' की वार्षिक सदस्यता ग्रहण कर इस साहित्यिक यात्रा के सहभागी बनें। इस अंक पर अपनी प्रतिक्रियाएँ अवश्य भेजें, ताकि संवाद और अधिक समृद्ध हो सके। साथ ही, हमारे डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़कर आप इस संवाद को निरंतरता प्रदान कर सकते हैं।

मुझे यह संपादकीय दायित्व सौंपने के लिए भारतीय ज्ञानपीठ के प्रबंध न्यासी साहू अखिलेश जैन तथा महाप्रबंधक श्री आर.एन. तिवारी के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। उनके विश्वास और सहयोग ने इस कार्य को संभव बनाया है।

साथ ही, भारतीय ज्ञानपीठ के पूर्व निदेशक मधुसूदन आनंद और ज्ञानपीठ के अध्यक्ष जस्टिस बिजेन्द्र जैन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता हूँ। उनकी साहित्यिक प्रतिबद्धता, दृष्टि और योगदान सदैव स्मरणीय रहेंगे।

(महेश्वर)